मृत्यु एक कल्पना है
मृत्यु एक कल्पना है
सद्गुरु
सद्गुरु

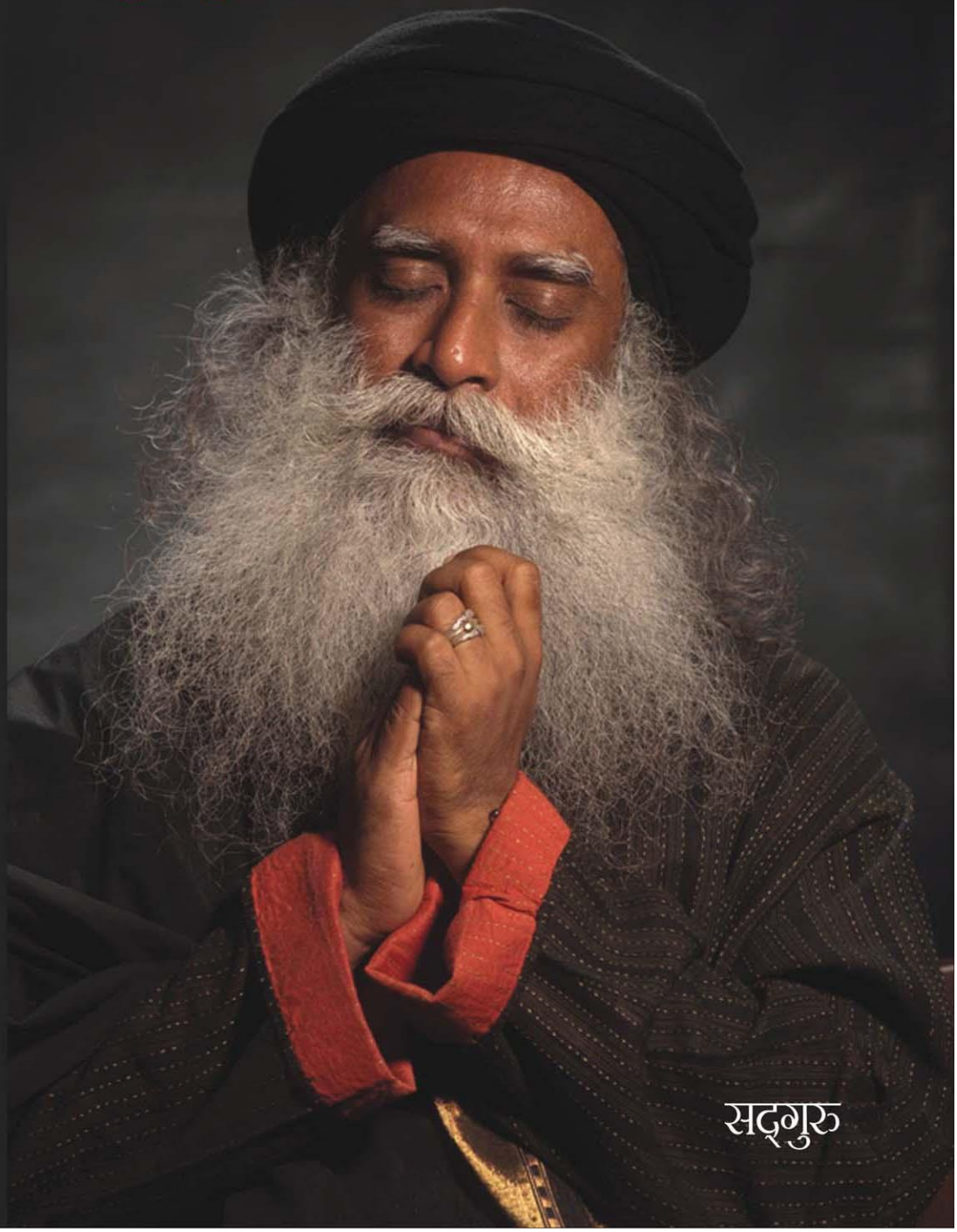

मृत्यु एक कल्पना है

सद्गुरु

मृत्यु एक कल्पना है

व

अच्छा और बुरा दुनिया को बाँटता है

ईशा फाउन्डेशन

विषय सूची

1. प्रस्तावना

2. मृत्यु एक कल्पना है

3. अच्छा और बुरा दुनिया को बाँटता है

प्रस्तावना

"क्या तुमने किसी मृत व्यक्ति को देखा? नहीं। तुमने एक मृत व्यक्ति को नहीं देखा। तुमने एक शव, एक मृत शरीर देखा। जब तुम कहते हो 'फलां व्यक्ति नहीं रहा, गुज़र गया,' तुम केवल यह कह रहे हो 'वे हमारे साथ नहीं रहे', इसका अर्थ यह नहीं है कि वे अब अस्तित्व में ही नहीं रहे। मृत्यु एक कल्पना है। मृत्यु एक भ्रांति है, यह मिथ्या है। कई लोगों ने इसके बारे में बातें कीं और तुम्हें विश्वास दिलाया। मृत्यु जैसी कोई चीज़ नहीं है। मात्र जीवन है, सिर्फ जीवन। एक आयाम से दूसरे में, दूसरे से तीसरे आयाम में जाना..." – सद्गुरु।

सद्गुरु हमारे समय के एक दिव्यदर्शी और एक योगी हैं। इनके साथ एक आत्मीय भेंट के दौरान श्रोताओं के एक दल ने अपनी जिज्ञासाओं को ही नहीं, बल्कि अपनी आशंकाओं को भी उनके साथ बाँटा। परम ज्ञान प्राप्त सद्गुरु से रू–ब–रू होकर बैठने का वह अनुभव अनोखा रहा, और वहाँ प्रश्नों की लड़ी–सी लग गई। अपनी अनोखी–निराली शैली में, और अनुकंपा के साथ सद्गुरु ने तर्कसंगत एवं विनोदपूर्ण ढंग से ऐसे सनातन प्रश्नों का भी सटीक उत्तर दिया, जैसे, देह–त्याग के बाद प्राणी कहाँ विचरता है? क्या अपने पिछले जन्मों को जानने से कोई लाभ है? कर्म, मोक्ष, ओजस, आदि–आदि।

पुस्तक के प्रथम खंड में सद्गुरु मृत्यु के संबंध में आदि काल से चली आ रही भीतियों की खोज करते हैं। वे उनका सर्व मर्ज नाशक औषधियों की तरह सांत्वनाप्रद समाधान देने की कोशिश नहीं करते, बल्कि एक ज्ञानी की तथ्यात्मक अंतर्दृष्टि को सामने रखते हैं। मृत्यु लोकप्रसिद्ध समतावादी है, अटल और असंदिग्ध है, जो पूर्ण रूप से भयभीत तो नहीं करती फिर भी अपरिवर्तनीय रूप से असुविधाजनक है। स्वयं को निर्भीक होने का दावा करने वाले लोग भी मानते हैं कि वे इस तथ्य के प्रति उदासीन नहीं रह सकते जिसमें कुछ पता नहीं चल पाता कि पर्दा गिरते समय क्या कुछ घटित होता है। पर्दे सदा गिरते ही रहते हैं।

पुस्तक के दूसरे खंड में, वह हमें दुनिया देखने के अपने औपचारिक, परम्परागत नज़रिये – हमारे अच्छे और बुरे के ख्याल जिससे दुनिया खंडित हो गई है – को ध्वस्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। दुनिया देखने का यह अभ्यस्त तरीका सिर्फ हिंसक और विभाजक ही नहीं है; दरअसल यह मिथ्या है। वह हमें स्मरण कराते हैं कि, "तुम्हारी अच्छाई तुम्हें मुक्त नहीं करेगी, तुम्हारी अच्छाई तुम्हारे अंदर निर्मलता नहीं लाएगी।" इसकी कुंजी यह है कि – "तुम यह अनुभव करना शुरू करो कि तुम्हारे आस–पास के समस्त जीवन की शत–प्रतिशत ज़िम्मेदारी तुम्हारी है... अपने आस–पास के जीवन के साथ पूर्ण रूप से सम्बन्ध जोड़ो। निर्मलता समावेश से आती है। अच्छाई बहिष्कार से आती है।"

ये किसी पंडित या दार्शनिक के साथ हुए संवाद नहीं हैं। इनमें शास्त्रों–ग्रंथों से कोई संदर्भ नहीं दिए गए हैं, न कोई कपोल कल्पना है, धर्मोपदेश या आस्था–विश्वास के निर्देश भी नहीं हैं, देवी–देवताओं या पवित्र–ग्रंथों की स्तुति या नमन भी नहीं है। इनके स्थान पर यहाँ एक ऐसे व्यक्ति का ज्ञान–भंडार है जो किसी भी संप्रदाय–विशेष की संबद्धता से उन्मुक्त है, ऐसा व्यक्ति जिनका ज्ञान अपने निजी–अनुभवों की निश्छलता में दृढ़मूल है।

इसका परिणाम है एक ऐसी पुस्तक जो साधकों के लिए आह्लादकारी है। एक ऐसी पुस्तक जो अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों का सार्थक एवं सटीक उत्तर देती है।

– ईशा साधक

7

मृत्यु एक कल्पना है

"अपने शरीर से परे प्राणी का आगे बढ़ना, इस बात पर निर्भर नहीं करता कि वह संसार में क्या था, और वह अपने बारे में क्या सोचता था या सब लोग उसके बारे में क्या सोचते थे। यह सिर्फ इस पर निर्भर करता है कि वह कितना जागरूक है, उसने अपने अंदर इस भौतिक शरीर के परे कितना कुछ पैदा किया है।"

— सद्गुरु

8

मृत्यु एक कल्पना है

प्रश्नकर्ता: हमें यह हमेशा सुनने को मिलता है कि एक व्यक्ति को इस जीवन–मृत्यु के चक्र से बाहर निकलना चाहिए, उसे मुक्त होना चाहिए। क्या आप इस पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं, सद्गुरु?

सद्गुरु: तो तुम जीवन–मृत्यु के चक्र को समाप्त करने, उससे निकलने के बारे में पूछ रहे हो। मैं हमेशा कहता हूँ कि तुम्हें ऐसी किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करना चाहिए जिसका तुमने अभी तक अनुभव नहीं किया है। यह कोई मायने नहीं रखता कि यह कौन कह रहा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम उस पर अविश्वास करो। नहीं। तुम बस नहीं जानते हो; बात सिर्फ इतनी ही है। कोई व्यक्ति तुम्हें कोई कहानी सुना रहा है। तुम्हें पता नहीं है कि वह सत्य है या नहीं है। तो यदि मैं भी कुछ कहता हूँ, तो उस बेकार की बात पर भी भरोसा मत करो। लेकिन इस पर अविश्वास भी न करो। सिर्फ इस पर गौर करो: "कोई इतने सारे लोगों के सामने बैठकर बिलकुल बेकार की बातें, बिलकुल बेतुकी बातें करने के लिए इच्छुक है; तो मैं ज़रा देखूँ यह सब किस बारे में है।" यदि तुम में इतना खुलापन है, तो तुम्हारे जीवन में संभावना बची हुई है। यदि तुम विश्वास करते हो, तो तुम इसे मार दोगे। यदि तुम अविश्वास करते हो, तब भी तुम इसे मार दोगे। समझे तुम?

मृत्यु का अस्तित्व है। क्या तुम कभी मरे हो, किसी भी तरह से? क्या तुम्हारी कभी मृत्यु हुई है? नहीं। क्या तुमने कभी किसी मृत व्यक्ति को देखा है? तुमने देखा? कहाँ?

प्रश्नकर्ता: अंतिम संस्कार के समय।

सद्गुरु: अंतिम संस्कार में तुमने एक मृत व्यक्ति को देखा? तुमने एक शव, एक मृत शरीर देखा। क्या तुमने एक मृत व्यक्ति को देखा? नहीं। तुमने एक मृत व्यक्ति को नहीं देखा। तुमने इसका अनुभव नहीं किया। या तुम किसी से मिले हो जो मर गया हो और उसने तुम्हें वापस आकर बताया हो कि मैं इस तरह से मरा था? नहीं, तुम मरे नहीं हो। तुमने मरे हुए व्यक्ति को भी नहीं देखा, न ही तुमसे कोई मृत व्यक्ति मिला है। तो बेकार का विचार कहाँ से तुम्हारे मन में आ गया कि तुम मरोगे? मृत्यु